DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

रीतिकाल

Part -2

LIVE 19-06-2024 09:00 AM

मतिराम

मतिराम, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्य ब्रजभाषा कवि हैं। मतिराम का जन्म उत्तर-प्रदेश के कानुपर जिले में स्थित तिकवांपुर में हुआ। आचार्य कवि चिंतामणि तथा भूषण के भाई थे । मतिराम का अधिकांश समय बूँदी दरबार में व्यतीत हुआ। वहाँ के हाड़ा राजाओं का वर्णन और चरित्र चित्रण उन्होंने बड़े प्रभावशाली ढंग से किया है। इन्होंने गढ़वाल के परमार वंश के राजा फतेहशाह के दरबार को भी सुशोभित किया।

रचनाएँ / कृतियाँ

- फूलमंजरी, लक्षण शृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका, वृत कौमुदी ।
- इनकी प्रथम कृति 'फूलमंजरी' है, जो संवत् 1678 में जहाँगीर के लिए बनाई ।
- इनका दूसरा ग्रन्थ 'रसराज' इनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार है। यह शृंगाररस और नायिकाभेद पर लिखा ग्रंथ है। इसका रचनाकाल 1690 और 1700 के मध्य माना जाता है।
- इनका तीसरा ग्रंथ 'ललित ललाम' बूँदी नरेश भावसिंह के आश्रय में लिखा गया अलंकारों का ग्रंथ है। इसका रचनाकाल संवत् 1720 के आसपास माना जाता है। इस ग्रंथ में लक्षण चंद्रालोक, कुवलयानन्द नामक संस्कृत ग्रंथों के आधार पर

है। इसमें रसराज के भी कुछ छन्द आए हैं। रसराज की निश्छल भावुकता के स्थान पर इसमें सूक्ष्म कल्पनाशीलता स्पष्ट होती है।

- मतिराम की अन्तिम रचना 'सतसई' है । यह संकलन संवत् 1740 के आस-पास बिहारी सतसई के उपरान्त किया गया जान पड़ता है। इसकी रचना भूप भोगनाश के लिए की गई थी । सतसई में सरस एवं ललित ब्रजभाषा के दोहे हैं। अधिकांश विषय श्रृंगार और नीति सम्बन्धी हैं।

देव

हिन्दी साहित्य के ब्रजभाषा काव्य के अन्तर्गत देव को महाकवि का गौरव प्राप्त है। उनका पूरा नाम देवदत्त था ।

देव कवि का जन्म इटावा में हुआ था। देव ने कई आश्रयदाताओं के यहाँ रहकर अपनी रचनाएँ की । देव कवि का सम्बन्ध औरंगजेब के पुत्र आजमशाह, दादरीपति राजा सीताराम के भतीजे भवानीदत्त, कुशलसिंह, भोगीलाल के राजरबारों से था, जहाँ इन्हें पर्याप्त सम्मान और प्रतिष्ठा मिली।

कृतियाँ / रचनाएँ

(i) भावविलास

(ii) अष्टयाम

(iii) भवानीविलास

(iv) रसविलास

(v) प्रेमचन्द्रिका

(vi) रागरत्नाकर

(vii) सुजान विनोद

(viii) जगत् दर्शन पच्चीसी (जग)

(ix) आत्म दर्शन पच्चीसी

(x) तत्वदर्शन पच्चीसी

(xi) प्रेम पच्चीसी (इन चारों पच्चीसियों का नाम देवशतक भी है।)

(xii) शब्द रसायन

(xiii) सुखसागर तरंग

(xiv) प्रेमतरंग

(xv) कुसलविलास

(xvi) जातिविलास

(xvii) देवचरित्र

(xviii) देवमायाप्रपंच

(xix) काव्य रसायन

- देव हित हरिवंश के अनन्य सम्प्रदाय में दक्षित थे।
- डॉ. नगेन्द्र ने 'सुखसागर तरंग' को नायिका भेद का विश्वकोश' माना है।
- देव कविता में 'अभिधा' को महत्त्व देते हुए 'काव्य रसायन' में लिखते हैं-

"अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रसबिरस, उलटी कहत नवीन ।। "

रसलीन

रसलीन का मूल नाम सैयद गुलाम नबी था । ये रसलीन उपनाम से कविता लिखते थे। हरदोई जिले के प्रसिद्ध कस्बा बिलग्राम के रहने वाले थे। ये 'मीर त फैल अहमद के शिष्य थे।

रसलीन की प्रमुख कृतियाँ निम्न हैं-

अंगदर्पण (1737) - इसमें 180 दोहें हैं।

रस प्रबोध (1747) - इसमें 1127 दोहे हैं।

सैयद गुलाम नबी 'रसलीन' कृत 'अंगदर्पण' में नखशिख वर्णन है। इस ग्रंथ का प्रसिद्ध दोहा है—

अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम, रतनार ।
जियत मरत झुक-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार ॥

रसलीन का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'रस प्रबोध' है। इसमें 1127 दोहे छन्दों में सभी रसों के अतिरिक्त 8 सात्विक भावों 33 संचारी भावों, नायक-नायिका भेद आदि का विवेचन है।

अनुभाव
स्वेद

रसलीन का दोहा छन्द पर अद्भुत अधिकार था, उनमें जो समाहार शक्ति, भाषा की कसावट और व्यंजना - शक्ति मिलती है वह बिहारी को छोड़कर किसी अन्य कवि में नहीं मिलती है।

मुबारक

मुबारक का पूरा नाम "सैयद मुबारक अली बिलग्रामी" है। ये अरबी, फारसी, संस्कृत तथा हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे। इनके दो ग्रंथ प्रसिद्ध हैं— 'शतक तथा तिलशतक'।

(माथे पर लटकते बाल

इसमें नायिका की अलक तथा तिल पर ही दोहे लिखे गए हैं। इनकी कविता अत्यन्त सरस है तथा उसमे कल्पना भी अनूठी है।

भूषण

भूषण रीतिकाल के तीन प्रमुख हिन्दी कवियों में से एक हैं, अन्य दो कवि हैं - बिहारी तथा केशवदास ।

- डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने भूषण का मूल नाम 'मतिराम या मनीराम' बताया आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इनका मूलनाम 'घनश्याम' बताया है।
- रीतिकाल में जब सब कवि शृंगार रस में रचना कर रहे थे, वीर रस में प्रमुखता से रचना कर भूषण ने अपने को सबसे अलग साबित किया।
- 'भूषण' की उपाधि उन्हें चित्रकूट के राजा रूद्रसाह के पुत्र हृदयराम ने प्रदान की थी। ये मोरंग, कुमायूँ, श्रीनगर, जयपुर, जोधपुर, रीवाँ, शिवाजी और छत्रसाल आदि के आश्रय में रहें। परन्तु इनके पसन्दीदा नरेश शिवाजी और बुन्देल थे।

- भूषण का जन्म टिकवापुर गाँव में हुआ था, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के घाटमपुर तहसील में पड़ता है।
- भूषण के काव्य की मूल संवेदना वीर - प्रशस्ति, जातीय गौरव तथा शौर्य वर्णन है। इन्होंने शिवाजी की युद्धवीरता, दानवीरता, दयावीरता व धर्मवीरता का वर्णन किया है। भूषण ने अपने काव्य की रचना ब्रजभाषा में की। वे सर्वप्रथम कवि हैं, जिन्होंने ब्रज भाषा को वीर रस की कविता के लिए अपनाया। भूषण की ब्रजभाषा में उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों की भरमार है।
- भूषण राष्ट्रीय भावों के कवि हैं। उनकी वाणी पीड़ित प्रजा के प्रति एक अपूर्व आश्वासन हैं । इनका समय औरंगजेब का शासन था ।

कृतियाँ / रचनाएँ

विद्वानों ने इनके छः ग्रंथ माने हैं-

शिवराज भूषण (1673), शिवाबावनी, छत्रसाल दशक, भूषण । उल्लास, भूषण हजारा, दूषनोल्लासा ।

परन्तु इनमें शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक और शिवावाबनी ही उपलब्ध हैं।

कुलपति मिश्र

कुलपति मिश्र आगरा के रहने वाले थे। ये जयपुर के महाराज जयसिंह के पुत्र महाराज रामसिंह के दरबार में रहते थे ।

रीतिकाल के कवियों में कुलपति मिश्र संस्कृत के विद्वान थे। इनका 'रस-रहस्य' 'मम्मट' के काव्य प्रकाश का छायानुवाद है।

कृतियाँ / रचनाएँ

- रस रहस्य (1670), संग्राम सार, युक्तितरंगिणी (1686), शिख, द्रोण पर्व (1680) गुण रस रहस्य
- कुलपति मिश्र रस ध्वनिवादी आचार्य थे। ये प्रसिद्ध कवि बिहारी लाल के भाँजे थे।
- कुलपति मिश्र कृत 'रस रहस्य' चिंतामणि कृत 'कविकुल कल्पतरू' के समान सर्वांग निरूपक ग्रंथ है। यह आठ वृत्तान्तों में विभक्त है, इसमें काव्य- लक्षण, काव्य-प्रयोजन, काव्य-हेतु, काव्य-भेद, शब्द-शक्ति, ध्वनि, गुण, दोष, अलंकार आदि का विवेचन किया गया है।
- कुलपति मिश्र कृत 'रस रहस्य' पर मम्मट के 'काव्य प्रकाश' विश्वनाथ के 'साहित्य दर्पण' और केशव की 'रसिक प्रिया' का प्रभाव है।

पद्माकर

रीतिकाल के ब्रजभाषा कवियों में पद्माकर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पद्माकर जी का जन्म 'सागर' में हुआ था। परन्तु 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बाँदा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अलावा कुछ विद्वान मध्य प्रदेश के सागर की बजाय उत्तर प्रदेश के नगर बाँदा को पद्माकर की जन्मभूमि कहते हैं। पद्माकर राजदरबारी कवि के रूप में कई नरेशों से सम्मानित किए गए हैं अतः वे अनेक राजदरबारों में सम्मानपूर्वक रहे।

इन्होंने अजयगढ़ के गुसाईं अनूप गिरी (हिम्मत बहादुर), जयपुर नरेश प्रतापसिंह, सवाई सिंह, ग्वालियर के शासक दौलतराव सिंधिया आदि के महलों की शोभा बढ़ाई।

पद्माकर ने सजीव मूर्त विधान करने वाली कल्पना के माध्यम से शौर्य, शृंगार, प्रेम, भक्ति, राजदरबार की सम्पन्न गतिविधियों, मेलों-उत्सवों, युद्धों और प्रकृति - सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया है। लाक्षणिक शब्दों के प्रयोग द्वारा वे सूक्ष्म-से-सूक्ष्म भावानुभूतियों को सहज ही मूर्तिमान कर देते हैं। उनके ऋतु वर्णन में भी इसी जीवन्तता और चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं।

इनकी भाषा सरस, काव्यमय, सुव्यवस्थित और प्रवाहपूर्ण है। छन्दानुशासन और काव्य - प्रवाह की दृष्टि से दोहा, सवैया और कवित्त पर इनका असाधारण अधिकार था।

13-11 22-26 31

कृतियाँ / रचनाएँ

- हिम्मत बहादुर विरुदावली (1792)
- जगत विनोद (1803-21)
- गंगालहरी (1808-21)
- कलि पच्चीसी
- आलीजा प्रकाश
- यमुना लहरी भग्वत्पंचाशिका
- अश्वमेघ
- पद्माभरण (1810)
- प्रबोध पचासा (1803-21)
- प्रताप सिंह विरुदावली (1808-21)
- राम - रसायन (1803-21)
- ईश्वर-पच्चीसी
- राजनीति कलि पचीसी

पद्माकर रीति काव्य परंपरा के अन्तिम चरण के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं। इन्हें कविराम - शिरोमणि उपाधि प्राप्त थी ।

- पद्माकर कृत 'जगत्विनोद' को श्रृंगार रस का सारग्रंथ कहते हैं।
- पद्माकर कृत 'हिम्मत बहादुर विरूदावली' अजयगढ़ के गुसाई अनूप गिरी (हिम्मत बहादुर) की काव्यात्मक प्रशंसा में लिखि हैं। यह वीर रस प्रधान ग्रंथ हैं।
- पद्माकर कृत 'पद्माभरण' अलंकार ग्रंथ है।
- पद्माकर की 'राम - रसायन' ग्रंथ दोहा - चौपाई छन्द में है।
- पद्माकार कृत प्रबोध पचासा' भक्ति और वैराग्य सम्बन्धी ग्रंथ है।
- 'जगत विनोद' की रचना इन्होंने सवाई जगत सिंह के लिए की।
- जयपुर नरेश ईश्वरी सिंह की प्रशस्ति में 'ईश्वर - पच्चीसी' की रचना की।